रीतिकालीन कवि वृन्द

कवि परिचय

रीतिकालीन परम्परा के अन्तर्गत वृन्द का नाम आदर के साथ लिया जाता है। इनके नीति के दोहे बहुत प्रसिद्ध हैं। वृन्द का जन्म संवत् 1700 में जोधपुर राज्य के अंतर्गत मेड़ता नामक गाँव में माना जाता है। इनका पूरा नाम वृन्दावन था। काशी में इन्होंने व्याकरण, साहित्य, वेदान्त, गणित आदि का ज्ञान प्राप्त किया और काव्य रचना सीखी। मुगल सम्राट औरंगजेब के यहाँ ये दरबारी कवि रहे। संवत् 1764 में किशन गढ़ के राजा राजसिंह ने वृन्द को औरंगजेब के पौत्र अजीमुशशान से मांग लिया था। किशनगढ़ में संवत् 1780 ई.वृन्द का निधन हुआ।

वृन्द ने बारहमासा, भाव पंचासिका,नयन पचीसी, पवन पचीसी , श्रृंगार शिक्षा, यमक सतसई पुस्तकों की रचना की। इनके लिखे दोहे 'वृन्द विनोद सतसई' में संकलित हैं।

वृन्द के 'बारहमासा' में बारहों महीनों का सुन्दर वर्णन है। 'भाव पंचासिका' में श्रृंगार के विभिन्न भावों के अनुसार सरस छंद लिखे हैं। 'श्रृंगार शिक्षा' में नायिका भेद के आधार पर आभूषण और श्रृंगार के साथ नायिकाओं का चित्रण है। नयन पचीसी में नेत्रों के महत्व का चित्रण है। इस रचना में दोहा, सवैया और घनाक्षरी छन्दों का प्रयोग हुआ है। पवन पचीसी में ऋतु वर्णन है।

हिन्दी में वृन्द के समान सुन्दर दोहे बहुत कम कवियों ने लिखे हैं। उनके दोहों का प्रचार शहरों से लेकर गाँवों तक में है। पवन पचीसी में 'षड्ऋतु' वर्णन के अन्तर्गत वृन्द ने पवन के वसंत, ग्रीष्म, वर्षा,शरद, हेमंत और शिशिर ऋतुओं के स्वरूप और प्रभाव का वर्णन किया है।

वृन्द की रचनाएँ रीति परम्परा की हैं ।उनकी 'नयन पचीसी' युगीन परम्परा से जुड़ी कृति हैं।

काव्य जीवन को संस्कारित करता है। अगली पीढ़ियों तक जीवन के उच्च अनुभवों को संप्रेषित करने की शक्ति काव्य में होती है। जीवन जीना यदि एक कला है तो इस कला की शिक्षा काव्य में समायी रहती है। व्यक्ति और समाज के स्वस्थ तालमेल में ही व्यक्ति के स्व विकास की सही भूमिका निर्धारित होती है। इस तरह से जीवन-विकास की शिक्षा देने वाला काव्य ही नीतिपरक काव्य कहा जाता है। सभी युगों में कविता का जीवन-शिक्षा से संबंध रहा है। मध्य युग में तो जीवन-शिक्षा को अपनी कविता का केन्द्रीय भाव बनाने वाले अनेक रचनाकार रचनारत रहे हैं। गिरिधर, वृन्द, रहीम के साथ-साथ जायसी, तुलसीदास और बिहारी आदि कवियों ने अपने काव्य में नीति को स्थान दिया है।

वृन्द के दोहे जीवन-शिक्षा के कोश हैं। उनका प्रत्येक दोहा जीवन के किसी न किसी अमूल्य अनुभव से परिपूर्ण है। प्रस्तुत दोहों में वृन्द ने अनेक शिक्षाप्रद जीवन-सूत्रों को संकलित किया है। अवसर के अनुकूल कही गई बात ही महत्वपूर्ण मानी जाती है। किसी को धोखा देकर एक बार सफलता पाई जा सकती है, किन्तु बार-बार नहीं। व्यक्ति की पहचान उसकी वाणी से हो जाती है। किसी भी कार्य को करने में जल्दबाजी अच्छी नहीं होती है। अज्ञानी व्यक्ति को उसके हित में कही बात भी खराब लग जाती है, इसलिए ऐसे आदमी से हित की बात करना भी उचित नहीं है। सरस्वती का भंडार इस रूप में अपूर्व है कि उसे जितना खर्च किया जाता है वह उतना बढ़ता है। ज्ञान का वितरण ही वितरणकर्ता को और ज्ञानवान बनाता है। इस तरह के नीति कथनों को वृंद ने अनेक उत्प्रेक्षाओं के माध्यम से अभिव्यक्ति किया है।

रहीम के दोहे जनसामान्य में आज भी प्रचलित हैं। उनके दोहे किसी मूल्यवान सूक्ति से कम नहीं हैं। प्रस्तुत दोहों के अनुसार सुख और दुख में अपनी शांति को बनाए रखनेवाला व्यक्ति ही बड़ा है। अच्छे लोग परोपकार के लिए ही संपत्ति इकट्ठी करते हैं। धन का घटना-बढ़ना तो धनिकों के लिए चिंता का विषय है। जो घास-पात खाकर जीवन गुजारते हैं उनको इससे क्या लेना-देना। दीनबन्धु जैसा बनने के लिए दीनों की चिन्ता करना आवश्यक है। दूसरों के घर बार-बार जाने वाला अपनी ही गरिमा को कम कर लेता है। दुर्दिनों से बचने के लिए यदि खराब जगह आश्रय ही लेना पड़े तो ले लेना चाहिए। सबको बस में कर लेने की ताकत प्रेम में ही है। गुणीजन और राजा में समानता है। इनमें कोई छोटा -बड़ा नहीं है। विपत्ति व कसौटी पर शत्रु -मित्र परखे जाते है। जीवन के विस्तृत विचार बोध के कवि रहीम के दोहों में शिल्प सौंदर्य का अनुपम दर्शन होता है।

इसमें दोहा, सवैया और घनाक्षरी छंदों का प्रयोग हुआ है। इन छंदों का प्रभाव पाठकों पर पड़ता है। 'यमक सतसई' में विविध प्रकार से यमक अलंकार का स्वरूप स्पष्ट किया गया हैं। इसके अन्तर्गत 715 छंद है।

वृन्द के नीति के दोहे जन साधारण में बहुत प्रसिद्ध हैं। इन दोहों में लोक-व्यवहार के अनेक अनुकरणीय सिद्धांत हैं। वृन्द कवि की रचनाएँ रीतिबद्ध परम्परा में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। इन्होंने सरल, सरस और विदग्ध सभी प्रकार की काव्य रचनाएँ की हैं।

वृन्द के दोहे

फीकी पै नीकी लगै, कहिये समय विचारि
सबको मन हर्षित करै, ज्यों विवाह में गारि।।1।।

नीकी पै फीकी लगै, बिन अवसर की बात।
जैसे बरनत युद्ध में, रस श्रृंगार न सुहात॥2॥

जो जेहि भावे सो भलौ, गुन को कछु न विचार।
तज गजमुक्ता भीलनी, पहिरति गुंज्जा हार॥3॥

फेर न ह्वै है कपट सों, जो कीजे व्यौपार।
जैसे हांडी काठ की, चढ़ै न दूजी बार॥4॥

नयना देय बताय सब, हिय को हेत अहेत।
जैसे निर्मल आरसी, भली बुरी कहि देत॥5॥

हितहू की कहिये न तिहि, जो नर होय अबोध।
ज्यों नकटे को आरसी, होत दिखाये क्रोध॥6॥

कारज धीरै होतु है, काहै होत अधीर।
समय पाय तरुवर फलै, केतक सींचो नीर॥7॥

ओछे नर के पेट में, रहै न मोटी बात।
आध सेर के पात्र में, कैसे सेर समात॥8॥

कहा कहौं विधि को अविधि, भूले परे प्रबीन।
मूरख को सम्पति दई, पंडित सम्पतिहीन॥9॥

सरस्वति के भंडार की, बड़ी अपूरब बात।
ज्यों खरचै त्यों-त्यों बढ़ै, बिन खरचै घट जात॥10॥

छमा खड्ग लीने रहै, खल को कहा बसाय।
अगिन परी तृनरहित थल , आपहिं ते बुझि जाय॥11॥

बुरौ तऊ लागत भलो, भली ठौर परलीन।
तिय नैननि नीको लगै, काजर जदपि मलीन॥12॥

जीवन परिचय

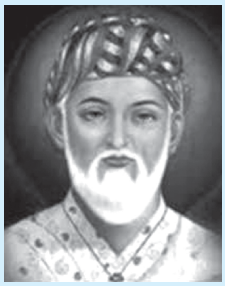

रहीम

रहीम नीति सिद्ध कवि हैं। उनके काव्य में भक्ति, नीति तथा वैराग्य की त्रिवेणी बह रही है। रहीम का पूरा नाम, नवाब अब्दुल रहीम 'खानखाना' था। इनके पिता बैरम खाँ थे जो अकबर के संरक्षक तथा सेनापति थे। रहीम का जन्म सन् 1556 ई. में हुआ था। वे अकबर के प्रधान सेनापति, मंत्री और नवरत्नों में से एक थे । रहीम बड़े दानप्रिय व्यक्ति थे। सन् 1626 ई. में वे परलोक सिधारे। रहीम की कविता का विषय नीति प्रेम है। अनेक सूक्तियों और नीति संबंधी दोहे आज भी मनुष्य जाति का पथ प्रदर्शन करते हैं। तुलसीदास के वे परम मित्र थे।

रहीम सतसई, बरवै नायिका भेद, रास पंचाध्यायी शृंगार सोरठा, मदनाष्टक ,दीवान फारसी, 'वाकयात बाबरी' का फारसी अनुवाद तथा खेट कौतुक, जातकम आपकी रचनाएँ हैं।

रहीम हिन्दी साहित्य की दिव्य विभूति हैं। उनकी वाणी में जो माधुर्य है, वह हिन्दी के बहुत थोड़े कवियों की रचनाओं में मिलता है। वे हिन्दी के ही नहीं फारसी और संस्कृत के भी विद्वान थे। हिन्दी में वे अपने दोहों के लिए प्रसिद्ध हैं।इन दोहों में नीति, ज्ञान,शृंगार और प्रेम का इतना सुन्दर समन्वय हुआ हैं कि मानव हृदय पर उसका बहुत गहरा और स्थायी प्रभाव पड़ता है। रहीम के दोहों के विषय भिन्न-भिन्न हैं- भक्ति ,ज्ञान, वैराग्य,धर्म, नीति, सत्संग, प्रेम, परिहास, स्वाभिमान आदि सभी विषयों पर उन्होंने सफलतापूर्वक अपने भावों को दोहाबद्ध किया है। इस्लामी सभ्यता में पले होने पर भी रहीम की भगवान कृष्ण के प्रति अनन्य भक्ति थी।

रहीम वास्तव में अपने नीति के दोहों के लिए ही हिन्दी भाषा- भाषी जनता में अत्यधिक लोकप्रिय हैं। अपने नीति के दोहों में वह एक

रहीम के दोहे

यों रहीम सुख-दुख सहत, बड़े लोग सह साँति।
उदत चन्द जेहि भाँति सो, अथवत ताही भाँति ॥1 ॥

तरूवर फल नहि खात है, सरवर पियहिं न पान।
कहि रहीम परकाज हित, संपति संचहि सुजान ॥2 ॥

कहि रहीम धन बढ़ि घटे, जात धनिन की बात।
घटै बढ़े उनको कहा घास बेचि जे खात ॥3 ॥

बड़ माया को दोष यह, जो कबहूँ घटि जाय।
तो रहीम मरिबो भलो, दुख सहि जिये बलाय ॥4 ॥

रहिमन याचकता गहे, बड़े छोट ह्वै जाति।
नारायण हू को भयो, बावन आँगुर गात ॥5 ॥

दीन सबन को लखत हैं, दीनहिं लखै न कोय।
जो रहीम दीनहिं लखै, दीनबंधु सम होय ॥6 ॥

जो रहीम ओछो बढ़ै, तो अति ही इतराय।
प्यादे सों फरजी भयो, टेढ़ो-टेढ़ो जाय ॥7 ॥

कौन बड़ाई जलधि मिलि, गंग नाम भौं धीम।
केहि की प्रभुता नहि घटी, पर घर गये रहीम ॥8 ॥

शिक्षक और उपदेशक के रूप में हमारे सामने आते हैं, उन्होंने सरल, सुबोध शब्दों में अपने भाव प्रकट किए हैं। दोहों के अतिरिक्त उन्होंने 'बरवै छंद' को भी अपनाया। वे इस छंद के जन्मदाता हैं। उनकी रचनाओं में अलंकार अपने स्वाभाविक रूप से प्रयुक्त हुए हैं। उपमा, रूपक, और उत्प्रेक्षा के प्रयोग में तो वे दक्ष थे। इनके अतिरिक्त श्लेष और यमक भी उनकी रचनाओं में मिलते हैं। रसों में शांत और श्रृंगार उनके प्रिय हैं।

रहीम की भाषा मुख्यत: अवधी और ब्रजभाषा है। फारसी भाषा के विद्वान होने पर भी उन्होंने अपनी रचनाओं में ब्रज और अवधी की पवित्रता पर कोई आँच नहीं आने दी। अपनी रचनाओं में उन्होंने मुहावरे और लोकोक्तियों का भी प्रयोग किया है।

रहीम ने अपने दोहों से हिन्दी साहित्य का गौरव बढ़ाया है। नीति और सत्संग के दोहों में उन्होंने तुलसी के समान सफलता प्राप्त की। सर्वसाधारण में रहीम के दोहों ने जो पैठ बनाई, वह अन्य दोहों के रचनाकारों ने नहीं। हिन्दी साहित्य जब तक जीवित रहेगा, तब तक रहीम की रचनाएँ हिन्दी भाषा-भाषी का पथ प्रशस्त करती रहेंगी।

दुरदिन परे रहीम कहि भूलत सब पहिचानि ।
सोच नहीं वित हानि को, जो न होय हित हानि ॥9 ॥

रहिमन मनहिं लगाय के, देखि लेहु किन कोय।
नर को बस करिबो कहा, नारायन बस होय ॥10 ॥

भूप गनत लघु गुनिन को, गुनी गनत लघु भूप।
रहिमन गिरि ते भूमि लौं, लखो तो एकै रूप ॥11 ॥

रहिमन विपदा हू भली, जो थोरे दिन होय।
हित-अनहित या जगत में, जानि परत सब कोय ॥12 ॥

अब रहीम मुश्किल पड़ी ,गाढ़े दोऊ काम।
साँचे से तो जग नहीं, झूठे मिलै न राम ॥ 13 ॥

अभ्यास

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

(1) बिना उपयुक्त अवसर के कही गई बात कैसी लगती है?

(2) ऐसी कौन सी सम्पति है जो व्यय करने पर बढ़ती है?

(3) सुख और दुख को किस प्रकार ग्रहण करना चाहिए?

लघु उत्तरीय प्रश्न

(1) किस उदाहरण के द्वारा कवि ने यह बताया है कि कोई बुरी चीज यदि भले स्थान पर स्थित हो तो भली लगती है?

(2) वृक्ष के माध्यम से कवि क्या संदेश देता है?

(3) रहीम ने 'विपदा' को क्यों भला कहा है?

(4) अच्छे लोग सम्पत्ति का संचय किसलिए करते हैं?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(1) वृन्द के संकलित दोहों के आधार पर उनके 'नीति' संबंधी विचार लिखिए।

(2) वृन्द की किन शिक्षाओं को आप जीवन में अपनाना चाहेंगे?

(3) निम्नलिखित पंक्तियों की व्याख्या कीजिए–

अ. कौन बड़ाई जलधि मिलि, गंग नाम भौ धीम।
केहि की प्रभुता नहि घटी, पर घर गये रहीम।

आ. सरस्वति के भण्डार की बड़ी अपूरब बात।
ज्यों खरचै त्यों–त्यों बढ़ै, बिन खरचै घट जात॥

काव्य सौन्दर्य–

1. निम्नलिखित शब्दों के तत्सम् रूप लिखिए–

सरवर, आंगुर, गुनी, अपूरब, खरचै, ओड़े।

2. निम्नलिखित काव्य पंक्तियों के अलंकार पहचानिए–

अ. ज्यों खरचै त्यों–त्यों बढ़े, बिन खरचे घट जाय।

आ. दीन सबन को लखत है, दीनहिं लखै न कोय।

इ. कहि रहीम परकाज हित सम्पति संचहि सुजान।

आइए सीखें:–

13 मात्राएँ	11 मात्राएँ
ऽ । ।।। ऽ ।।। ऽ	ऽ ।। । ऽ । ऽ।
दीन सबन को लखत हैं	दीनहि लखै न कोय।
ऽ । ऽ । ऽ ।। । ऽ	ऽ । ऽ । । । ऽ।
जो रहीम दीनहि लखै,	दीनबन्धु सम होय॥

यह दोहा छंद है। यह मात्रिक छंद के अन्तर्गत आता है। इस छंद की रचना मात्राओं की गिनती के आधार पर होती है।

मात्राएँ कैसे गिनते हैं?

मात्रा

किसी स्वर के उच्चारण में जो समय लगता है उसकी अवधि को मात्रा कहते हैं। मात्राएँ–ह्रस्व और दीर्घ होती हैं।

ह्रस्व मात्रा–

अ, इ, उ, ऋ ह्रस्व स्वर की हैं। इसे लघु भी कहते है। इसकी एक मात्रा गिनी जाती है। इसका चिह्न ' ।' है।

दीर्घ मात्रा-

आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ की दीर्घ मात्रा होती है। इसे गुरू भी कहते हैं। इसकी दो मात्राएँ गिनी जाती हैं। इसका संकेत चिह्न ' ऽ ' है।

और भी जानिए-

1. कविता में प्राय: संयुक्त अक्षर से पहले वर्ण को गुरु ऽ माना जाता है। जैसे-दीनबन्धु
2. अनुस्वार से युक्त ह्स्व वर्ण गुरु माना जाता है।

   जैसे बसंत- ।ऽ।
3. विसर्ग युक्त ह्स्व वर्ण गुरु माना जाता है। जैसे-अत: ।ऽ
4. किसी शब्द के प्रथम संयुक्ताक्षर में दीर्घ मात्रा हो तो वह गुरु माना जाएगा किन्तु यदि ह्स्व है तो लघु रहेगा

   जैसे- क्लांत ऽ।, स्वर ।।
5. यदि संयुक्त वर्ण के पहले का वर्ण स्वयं गुरु हो उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है जैसे- मान्धाता ऽ ऽ ऽ (यहाँ ''मा' गुरु ही रहेगा। संयुक्त का कोई प्रभाव नहीं)
6. चन्द्र बिन्दुवाला अक्षर लघु मात्रा में आता है। जैसे-हँस॥

3. निम्नलिखित छंदो में मात्राएँ गिनकर, छंद की पहचान कीजिए-

   अ. कारज धीरे होतु है, काहे होत अधीर।

   समय पाय तरूवर फलै, केतिक सींचौ नीर॥

   आ. नैना देत बताय सब, हिय को हेत अहेत।

   जैसे निर्मल आरसी, भली बुरी कहि देत॥

पढ़िए और समझिए-

अब न कुछ भी पास मेरे
माँगते हो रूप क्या,
हार बैठा जिन्दगी का
दाँव पहले दाँव में।
मत कुरेदो दर्द होता है, हृदय के घाव में।

इस काव्यांश में सरल और सुबोध शब्द-योजना है। अत: पढ़ते ही इसका अर्थ स्पष्ट हो रहा है। उपर्युक्त काव्यांश में सरल तथा सुबोध शब्दों से अर्थ की अभिव्यंजना होने पर काव्य में 'प्रसाद गुण' की स्थिति बन गई हैं।

4. रहीम के संकलित दोहों में से प्रसाद गुण सम्पन्न दोहे छाँटकर लिखिए।

समझिए-

बैन सुन्या जब ते मधु, तबते सुनत न बैन।

इस पद्यांश में कैसी विडम्बना है? 'बैन सुन्या' और 'सुनतन बैन' में विरोध दिखाई पड़ता है। वस्तुत: सच्चाई यह है कि विरोध का आभास हो रहा है।

जहाँ, किसी कार्य पदार्थ या गुण में वास्तविक विरोध न होते हुए भी विरोध का आभास हो वहाँ विरोधाभास अलंकार होता हैँ।

और भी जानिए-

किसुक, गुलाब, कचनार और अनारन की

डारन पै डोलत अंगारन के पुंज है।

यहाँ पलाश, गुलाब, कचनार और अनार की लाल फूलों का प्रतिषेध कर उनमें अंगारन के पुँज की स्थापना की है। और सच्ची बात छिपा ली गई है जहाँ किसी सच्ची बात को छिपाकर उसके स्थान पर किसी झूठी बात या वस्तु की स्थापना की जाए वहाँ अपह्नुति अलंकार होता है।

5. निम्नलिखित काव्यांश में अलंकार पहचानिए –

(क) सुनहू देव रघुवीर कृपाला। बन्धु न होइ मोरि यह काला॥

(ख) या अनुरागी चित्त की गति समझे नहिं कोइ। ज्यों-ज्यों बूढ़ै स्याम रंग, त्यों-त्यों उज्ज्वल होइ।

योग्यता विस्तार

1. नीति और शिक्षा से संबन्धित किसी लघु नाटिका को खोजकर विद्यालय के सांस्कृतिक कार्यक्रम में प्रस्तुत कीजिए।
2. 'विधाता ने मूर्ख को सम्पत्ति दी है और पण्डित को निर्धन बनाया है'। वृन्द के इस कथन पर परिचर्चा आयोजित कीजिए।
3. नीचे लिखे गए दोहों के भावों को लिखिए-

   अ. करत-करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान।
   रसरी आवत जात ते, सिल पर परत निसान॥

   आ. रहिमन चुप ह्वै बैठिए, देखि दिनन को फेर।
   जब नीके दिन आइहै, बनत न लागहि बेर॥
4. 'मित्रता', 'सत्संगति', 'परोपकार', 'मीठी बोली' आदि शीर्षकों के अन्तर्गत अन्य दोहों, सूक्तियों आदि का संकलन कीजिए।

शब्दार्थ

सुहात= अच्छा लगता है। **गजमुक्ता**=हाथी के मस्तक से मिलने वाला मोती। **हिय**=हृदय। **हेत** =भलाई। **अहेत**=बुराई। **आरसी**=दर्पण। **माहि**=बीच में। **तिहि**=उससे। **अबोध**=समझ की कमी। **केतिक**=कितना ही। **मोटी बात**=गम्भीर बात। **सेर**= पुराने जमाने का एक तौल। **विधि**-ब्रह्मा। **अविधि** = उल्टे कार्य। **प्रवीन**=चतुर। **अपूरब** =अपूर्व, अनोखी। **बसाय**=वश। **अगिन**=अग्नि। **थल**=जगह। **तऊ**=फिर भी। **नीको**=अच्छा। **जदपि**=यद्यपि। **पे**=पर।

***